का आधिपत्य स्थापित हो गया।

सुमेरियन सभ्यता के आरम्भिक शहरी समाजों का स्वरूप
(NATURE OF THE EARLY URBAN SOCIETIES OF SUMERIAN CIVILIZATION)

सुमेरियन सभ्यता के आरम्भिक शहरी समाजों का स्वरूप प्रगतिशील प्रतीत होता है। वास्तव में, यह सभ्यता छोटे नगर राज्यों को मिलाकर विकसित हुई थी। प्रत्येक नगर के चारों ओर खेत होते थे जहाँ से भोजन सामग्री की पैदावार होती थी। प्रत्येक नगर नदी अथवा नहर के किनारे एवं मन्दिरों के इर्द-गिर्द बसा होता था। नगर में खजूर, अनार, अंजीर व अंगूर आदि वृक्षों से भरे हुए उद्यान होते थे। नगर के चारों ओर धूप में सुखाई गई ईंटों की चारदीवारी होती थी। इस चारदीवारी के बाहर गरीबों की झोपड़ियाँ होती थीं।[1] इन शहरी समाजों के स्वरूप को हम निम्न बिन्दुओं द्वारा समझ सकते हैं—

(1) शासन पद्धति (Administrative System)—सुमेर सभ्यता के नगरों में रहने वाले समाज का धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध था। उनका विश्वास था कि समस्त सम्पत्ति देवताओं की होती है। इस सम्पत्ति पर नियन्त्रण देवताओं के प्रतिनिधि पुरोहित वर्ग का माना जाता था अर्थात् सैद्धान्तिक रूप से तो सम्पत्ति देवताओं की थी मगर व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस पर पुरोहित वर्ग का नियन्त्रण था। इस प्रकार इन आरम्भिक नगरों में पुरोहित वर्ग अत्यधिक सम्पन्न हो गया। **समाज अपने व देवताओं के बीच मध्यस्थ की भूमिका में पुरोहित वर्ग को देखता था।** समाज अपनी हर प्रकार की समस्याओं का निदान पुरोहित वर्ग से प्राप्त करता था। पुरोहित वर्ग धार्मिक, दार्शनिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक रूप से इस आरम्भिक समाज का नेतृत्व करता था। अतः राजाओं का पद निर्मित होने से पूर्व नगरों का शासन पुरोहित ही चलाते थे।

प्रत्येक नगर का एक मुख्य देवता होता था एवं उसी देवता का मन्दिर प्रत्येक नगर में होता था। उस विशेष मन्दिर का पुजारी ही नगर का राजा होता था। स्पष्ट है कि नगर का धर्मगुरु (पुरोहित) एवं नगर का शासक एक ही व्यक्ति होता था। नगर राज्य परस्पर अन्य कारणों के अलावा प्रमुखतः नहर व नदी के जल हेतु संघर्ष करते थे। बाह्य आक्रमणों से रक्षा करना, कर वसूलना, व्यापार का प्रबन्ध करना राजा का कर्तव्य माना जाता था। राजा को देवता के प्रति उत्तरदायी भी माना जाता था। कई विद्वानों का मानना है कि पुरोहित वर्ग के पश्चात् राजा के पद का निर्माण भी इस युग में हो गया था। राज्य के शासक को पटेसी कहा गया है।

(2) धार्मिक स्थिति (Religious Position)— सुमेरियन समाज का धर्म के प्रति अत्यधिक झुकाव था। आरम्भ में वे एकेश्वरवादी थे, प्रत्येक नगर के अपने संरक्षक देवी-देवता होते थे। उर नगर का संरक्षक देवता चन्द्रमा था जिसे नन्नार कहा जाता था। प्रत्येक नगर में देवता का मन्दिर होता था। इस सभ्यता की प्राचीनतम इमारत एनकी (Enki) का मन्दिर है जो कि एरिडू (Erido) नगर में स्थित था। सूर्य की पूजा सुमेर में प्राचीन काल से प्रचलित थी। निपुर नामक नगर में **एनलिल** नामक देवता एवं उनकी प्रेयसी **निनलिन** के वृहद् मन्दिर निर्मित किये गये। उर नामक नगर में धरती की कुमारी देवी इन्नीनी की पूजा होती थी, इसे प्रेम एवं विलास की देवी कहा जाता था। किश एवं लगाश नगरों के लोग निकारसाग नामक देवी की पूजा करते थे। इसे दुखियों की माता माना जाता था, यह ऐसे लोगों की सहायता करती थी जो कष्ट में होते थे। निंगिरसू सिंचाई का देवता था। आबू अथवा तामूज कृषि का देवता माना जाता था।[2]

सुमेरवासियों ने एकेश्वरवाद के बाद प्रकृति की आराधना आरम्भ कर दी थी। इनमें वायु का देवता एनलिल, पृथ्वी का देवता एनकी, जल का देवता ईअ (Ea) एवं आकाश का देवता अनु (Anu) प्रमुख थे। ये लोग सूर्य को उटु (Utu), चन्द्रमा को नन्नार (Nannar), शुक्र तारे को इनन्ना एवं यम को एरेस्कीगल (Ereshkigal) नाम से जानते थे। सुमेर सभ्यता के लोग देवी-देवताओं के पुत्र-पुत्रियों का भी उल्लेख करते हैं। वायु देवता एनलिल का पुत्र सिंचाई का देवता निंगरसु एवं उसकी पत्नी बाबा थी।[3] उपज की देवी इश्तर को अनु की पुत्री माना गया था।

---

1 सुशील माधव पाठक, **विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास**, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1982, पृ. 79.
2 विल ड्यूरेन्ट, पूर्वोक्त, पृ. 124.
3 राय गोविन्द चन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 33.

Scanned with OKEN Scanner

सुमेरवासी देवताओं के ऊँचे-ऊँचे मन्दिर बनवाते थे, ये एक लम्बी मीनार की शक्ल के होते थे। इन्हें जिगुरात के नाम से पुकारा जाता था। जिगुरात का अर्थ होता है 'स्वर्ग की पहाड़ी'। इनका निर्माण पवित्र क्षेत्र में एक कृत्रिम पहाड़ी पर ईंटों से होता था। उर नामक नगर के जिगुरात में तीन मंजिलें थीं एवं उसकी ऊँचाई 20 मीटर से अधिक थी। मन्दिरों से लगे हुए पुरोहितों के रहने के कमरे भी बने होते थे। सुमेरिया के लोग भौतिक सुख, उपज में बढ़ोत्तरी हेतु देवताओं से प्रार्थना किया करते थे। इनकी मान्यता थी कि संसार का प्रत्येक कार्य देवताओं की इच्छानुसार ही होता है।

(3) **सामाजिक स्थिति** (Social Status)— सुमेरियन सभ्यता का समाज तीन वर्गों में विभाजित था। **उच्च वर्ग** में राज परिवार के लोग, उच्च पदाधिकारी एवं पुरोहित आते थे। **मध्यम वर्ग** में स्वतन्त्र नागरिक, सामन्त एवं व्यापारी आते थे। **निम्न वर्ग** के तहत दास एवं कृषक आते थे। उच्च वर्ग के तहत पुरोहित वर्ग को सम्मानित स्थान प्राप्त था। निम्न वर्ग के तहत आने वाले दासों की स्थिति शोचनीय थी। **दण्ड का निर्धारण करते समय वादी एवं प्रतिवादी की सामाजिक प्रतिष्ठा का ध्यान रखा जाता था।** सुमेरियन पुरुष वस्त्रों में लुंगी का प्रयोग करते थे, शरीर का ऊपरी भाग प्रायः वे खुला रखते थे। स्त्रियाँ बाएँ कन्धे से नीचे तक पोशाक में ढँकी रहती थीं। पहले वे भेड़ की खाल पहनते थे बाद में ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करने लगे।

स्त्रियों की स्थिति (Condition of Women)— सुमेरियन समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। स्त्रियों को ऐसे बहुत से अधिकार प्राप्त थे जो उन्हें परवर्ती युगों में कभी नहीं मिले। सम्भवतः विवाह प्रथा अस्तित्व में आ चुकी थी एवं विवाह के कुछ नियम भी थे। विवाह में पिता से मिले दहेज पर वधू का अधिकार था। यद्यपि वधू एवं उसका पति इस सम्पत्ति के संयुक्त रूप से मालिक होते थे मगर वसीयत के रूप में वधू ही इस सम्पत्ति को किसी और को दे सकती थी। पति एवं वयस्क पुत्र के न रहने पर स्त्री ही अपने घर व जमींदारी की देखभाल करती थी। पति के रहते हुए भी स्त्री स्वतन्त्र रूप से अपना व्यापार कर सकती थी एवं दासों को खरीद-बेच सकती थी। कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में पुरुष अपनी स्त्री को अपना कर्ज चुकाने हेतु दूसरे को बेच सकता था। बच्चों पर माता-पिता का अधिकार था, वे उन्हें बेच सकते थे। नैतिक क्षेत्र में दोहरे मापदण्ड प्रचलित थे, स्त्रियों को पुरुष वर्ग से अधिक उत्तरदायित्व उठाना पड़ता था। उससे आशा की जाती थी कि अपने पति एवं राज्य को कई सन्तान देगी। यदि वह लगातार माँ बनने से इन्कार करती थी तो उसे डुबोकर मार डाला जाता था। बाँझ होने पर स्त्री को तलाक देकर पुरुष दूसरा विवाह कर सकता था। पुरुष के लिये व्यभिचार माफ था परन्तु स्त्री को व्यभिचार करने पर मृत्युदण्ड दिया जाता था। सुन्दर स्त्रियों को मन्दिर में देवदासी के रूप में रखा जाता था परन्तु यह अपमानजनक नहीं माना जाता था। पिता को इस बात पर गर्व होता था कि उसकी पुत्री को मन्दिर में देवदासी के रूप में रखा जा रहा है। जब परिवार की किसी कन्या को देवर्पित किया जाता था तो उत्सव मनाया जाता था। लड़की को विवाह पर दिये जाने वाला दहेज पिता मन्दिर को भेंट करता था। निम्न वर्ग की स्त्रियों की तुलना में उच्च वर्ग की स्त्रियों की दशा अत्यधिक अच्छी थी। वे प्रचुर मात्रा में आभूषण पहनती थीं, अत्यधिक श्रृंगार करती थीं एवं विलासिता का जीवन व्यतीत करती थीं। स्त्रियों के प्रमुख आभूषण—अंगूठी, कण्ठहार, कड़े, पायल एवं कर्णफूल आदि थे। सम्भवतः स्त्रियाँ गालों पर लाली लगाना व भौंहें संवारना जानती थीं।

(4) **अर्थव्यवस्था** (Economy)—सुमेर के आरम्भिक समाज की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, पशुपालन एवं व्यापार था। सुमेर के भू-भाग में खेती करने वालों को प्राचीनतम अवशेष **हुसन्ना** से मिले हैं जो असीरिया के भू-भाग में फरात नदी के पश्चिम में अवस्थित है।[1] सिंचाई की उन्नत व्यवस्था थी, नगरों में नहरों का जाल बिछा हुआ था। सुमेरियन समाज मुख्यतः गेहूँ, जौ एवं खजूर की खेती करता था। मन्दिरों के पास फलों के बाग होते थे। मछली पालन किया जाता था। निपुर नगर से 1949-50 ई. में एक 1700 ई. पू. का कृषि सम्बन्धी अभिलेख मिला है जो उस काल की कृषि की उन्नति को बताता है। इसे विद्वानों ने **'विश्व का प्रथम कृषि पंचांग'** कहा है। इस अभिलेख में एक कृषक अपने पुत्र को बताता है कि मई-जून में बारिश के समय से लेकर अप्रैल-मई तक फसल कटने के समय तक क्या-क्या करना चाहिए। खेत की पैदावार बढ़ाने के उपाय भी इस अभिलेख में दिये गये हैं। सुमेरवासी हल का प्रयोग जानते थे और इसे खींचने में बैल का प्रयोग करते थे।

1 गार्डन चाइल्ड, **पूर्वोक्त**, पृ. 105.